○ 15 / 07 / 22 की मुरली से चार्ट ○

⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *पढाई पर पूरा ध्यान दे अपने ऊपर आपेही कृपा की ?*

➢➢ *दुखियो को सुखधाम का मालिक बनाने की सेवा की ?*

➢➢ *मन-बुधी की एकाग्रता द्वारा हर कार्य में सफलता प्राप्त की ?*

➢➢ *अन्दर से अनासक्त व मनमनाभव रहे ?*

────────────────────────

✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° °

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° °

〰✧ *विश्व कल्याण करने के लिए आपकी वृत्ति, दृष्टि और स्थिति सदा बेहद की हो।* वृत्ति में जरा भी किसी आत्मा के प्रति निगेटिव या व्यर्थ भावना नहीं हो। *निगेटिव बात को परिवर्तन कराना, वह अलग चीज़ है। लेकिन जो स्वयं निगेटिव वृत्ति वाला होगा वह दूसरे के निगेटिव को पॉजेटिव में चेंज नहीं कर सकता।*

✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° ° ••☆••✧° °

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

>> *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

✺ *"मैं कल्प-कल्प की विजयी आत्मा हूँ"*

~✧ माया को जीत लिया है? मायाजीत बन गये हो? कि अभी विजयी बनना है? माया का काम है खेल करना और आपका काम है खेल देखना। खेल में घबराना नहीं। घबराते हैं तो वह समझ जाती है कि ये घबरा तो गये हैं, अब लगाओ इसको अच्छी तरह से। *माया भी तो जानने में होशियार है ना। कुछ भी हो जाये, घबराना नहीं। विजय हुई ही पड़ी है। इसको कहा जाता है सम्पूर्ण निश्चयबुद्धि।*

~✧ पता नहीं क्या होगा, हार तो नहीं जाऊंगा, विजय होगी वा नहीं -ये नहीं। सदैव यह नशा रखो कि पाण्डव सेना की विजय नहीं होगी तो किसकी होगी! कौरवों की होगी क्या? तो आप कौन हो? पाण्डवों की विजय तो निश्चित है ना। कोई भी बड़ी बात को छोटा बनाना या छोटी बात को बड़ी बनाना अपने हाथ में है। किसका स्वभाव होता है छोटी बात को बड़ा बनाने का और किसका स्वभाव होता है बड़ी बात को छोटा बनाने का। *तो माया की कितनी भी बड़ी बात सामने आ जाये लेकिन आप उससे भी बड़े बन जाओ तो वह छोटी हो जायेगी। आप नीचे आ जायेंगे तो वह बड़ी दिखाई देगी और ऊपर चले जायेंगे तो छोटी दिखाई देगी।*

~✧ *कितनी भी बड़ी परिस्थिति आये, आप ऊंची स्व-स्थिति में स्थित हो जाओ तो परिस्थिति छोटी-सी बात लगेगी और छोटी-सी बात पर विजय प्राप्त

करना सहज हो जायेगा। निश्चय रखो कि अनेक बार के विजयी हैं। अभी कोई इस कल्प में विजयी नहीं बन रहे हैं, अनेक बार विजयी बने हैं।* इसलिए कोई नई बात नहीं है, पुरानी बात है। लेकिन उस समय याद आये। ऐसे नहीं-टाइम बीत जाये, पीछे याद आये कि ये तो छोटी बात है, मैंने बड़ी क्यों बना दी। समय पर याद आवे की मैं कल्प-कल्प का विजयी हूँ।

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *ये तो बाप-दादा ने सेवा के लिए समय दिया है।* सेवाधारी का पार्ट बजा रहे हो। तो अपने को देखो *यह शरीर का बन्धन तो नहीं है* अथवा यह पुराना चोला टाइट तो नहीं है?

〰✧ टाइट ड्रेस तो पसन्द नहीं करते हो ना? ड्रेस टाइट होगी तो एवररेडी नहीं होंगे। *बन्धन मुक्त अर्थात लूज ड्रेस, टाइट नहीं।*

〰✧ आर्डर मिला और सेकण्ड में गया। ऐसे बन्धन-मुक्त, योग-युक्त बने हो? *जब वायदा ही है 'एक बाप दूसरा न कोई तो बन्धन मुक्त हो गये ना।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

⊹˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦

⊹˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

⊹˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦

〰✧ लौकिक में जब वृद्धि होती है तो एक-एक बिन्दी लगाते जाते हैं। आपको भी बिन्दी लगाना है। मैं भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी। *बड़े ते बड़े व्यापारी हो लेकिन लगाना है बिन्दी। सारे दिन में कितनी बिन्दी लगाते हो? जब क्वेश्चन होता है तो बिन्दी मिट जाती है। बिन्दी के बिना क्वेचन भी हल नहीं होता।* मैं भी बिन्दी, बाबा भी बिन्दी। इसके लिए यह भी कोई नहीं कह सकता कि समय नहीं है। *सेकण्ड की बात है।* तो जितने सेकण्ड मिलें बिन्दी लगाओ फिर रात को गिनो कितनी बिन्दी लगाई! *किसी बात को सोचो नहीं, जो बात ज्यादा सोचते हो वो ज्यादा बढ़ती है। सब सोच छोड़ एक बाप को याद करो, यही दुआ हो जायेगी।*

⊹˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

⊹˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦ ••☆••✧˚ ◦

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- रूहानी पण्डे से सत्य तीर्थ कर राजाई और घर को याद करना"*

➳ _ ➳ मधुबन घर के आँगन में मीठे बाबा के कमरे से निकलकर... मै आत्मा तपस्या धाम की ओर बढ़ती हूँ... और वहाँ पहुंचकर मीठे बाबा की यादो में खुद को भूल जाती हूँ... नजरे उठाकर जो देखती हूँ तो बाबा भी कमरे में मौजूद मुस्करा रहे है... और *मुझे प्रेम सुख शांति की गहन अनुभूतियों में ले चलने के लिए अपना हाथ थमा रहे है.*.. मीठे बाबा अपने मखमली हाथो में मेरी ऊँगली पकड़ कर कह रहे...तू जहाँ जहाँ चलेगा, मेरा साया साथ होगा....

❉ *प्यारे बाबा मुझ आत्मा के सुखो की खातिर यूँ धरती पर उतरकर कहने लगे :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... आत्मा के सच्चे तीर्थ हे शांति धाम और सुखधाम... ईश्वर पिता की यादो में अपने सच्चे तीर्थो को पाओ... जनमो की ठोकरे के बाद जो विश्व पिता मिला है... *उसके प्यार की गहराइयो में डूब कर राजाई और घर को याद करो.*.."

➳ _ ➳ *मै आत्मा ईश्वर पिता के प्यार को पाकर खुशियो की चरमसीमा पर हूँ और कह रही हूँ :-* "प्राणप्रिय बाबा मेरे... देह की मिटटी में लथपथ मै आत्मा पत्थरो में आपको खोज रही थी... आज भाग्य ने आप भगवान से मिलाकर मुझे हर भटकन से छुड़ा दिया है... मेरा *जीवन सच्ची खुशियो से सजाकर सदा का खुशनसीब बना दिया है.*..

❉ *प्यारे बाबा मेरे प्रेम भावो को देख देख मुस्करा रहे है... और ज्ञान रत्नों को मेरी झोली में डालते हुए कह रहे है :-* "प्यारे लाडले बच्चे... ईश्वरीय यादो में सच्चे सुख समाये है... सच्ची यात्रा कराने वाला रूहानी पण्डा विश्व पिता सम्मुख है... उसकी यादो में रहकर, अपने घर और राजाई को याद करो... *जहाँ सुखो भरा संसार आपका इंतजार कर रहा.*.."

➳ _ ➳ ⁎मै आत्मा ईश्वर पिता को अपने प्यार में रूहानी पण्डा बना देखकर... अपनी खुशनसीबी पर बलिहार हूँ और कह रही हूँ :-⁎ "ओ मीठे मीठे बाबा मेरे... मेरे जनमो की भटकन देख, मेरे जख्मी पेरो की तपिश मिटाने आप धरती पर आ गए हो... मुझे विस्तार से सार में ले जाकर सदा का सुखी बना रहे हो... ⁎मेरे कदमो में सुखो के फूल बिछा रहे हो.⁎.."

❉ ⁎मीठे बाबा मुझ आत्मा को अपनी शक्तियो से वरदानों से सजाते हुए कह रहे :-⁎ " सिकीलधे लाडले बच्चे... ईश्वर पिता के बिना... चहुँ ओर बिखरी अपनी बुद्धि को अब समेटकर, यादो के तारो में पिरो दो... ⁎ईश्वर संग सच्चे तीर्थ करने वाले महान भाग्यशाली बनो..⁎. अपने मीठे घर और सुखमय संसार को याद करो..."

➳ _ ➳ ⁎मै आत्मा पल भर में अपने मीठे घर और सुखधाम में पहुंचने के मीठे भाग्य को देख बाबा से कह रही हूँ :-⁎ "प्यारे मीठे बाबा... आपने सच्ची श्रीमत देकर मुझे कितना सुखी, कितना हल्का, प्यारा और निश्चिन्त बना दिया है... मै आत्मा आपकी यादो के साये में बैठकर... ⁎अपने मीठे घर, और खुशियो भरे स्वर्ग की सैर कर आती हूँ..⁎..अपने दिल के जज्बात मीठे बाबा को सुनाकर, मै आत्मा अपने कर्म संसार में आ गयी..."

∫∫ 7 ∫∫ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ ⁎"ड्रिल :- बाप से आशीर्वाद वा कृपा मांगने के बजाए पढ़ाई पर पूरा ध्यान देना है⁎"

➳ ➳ अपने परम शिक्षक, मोस्ट बिलवेड शिव बाबा की याद मे मन

बुद्धि को एकाग्र करके मैं अशरीरी स्थिति में स्थित होकर जैसे ही बैठती हूं। वैसे ही मेरे परम शिक्षक, मीठे शिव बाबा का प्यार उनकी अनंत शक्तियों की किरणों के रूप में परमधाम से सीधा मुझ आत्मा पर बरसने लगता है। *उनकी मीठी याद मुझे सहज ही असीम आनंद से भरपूर करने लगती है। और गहन आनंद की अनुभूति में समाई हुई मैं आत्मा लाइट का सूक्ष्म आकारी शरीर धारण कर अपने परम शिक्षक से मिलन मनाने के लिए चल पड़ती हूं*। मन बुद्धि की इस रूहानी यात्रा पर चलते चलते इस भौतिक संसार के सभी दृश्यों को मैं आत्मा देखती जा रही हूं।

➳ _ ➳ मंदिरों, मस्जिदों, गुरुद्वारों में लोगों की भीड़ लगी है। स्वयं को तकलीफ दे कर गर्मी, सर्दी, बरसात सब कुछ सहन करके लोग नंगे पांव तीर्थो पर जा रहें हैं। भगवान की महिमा गाते, जयकारे लगाते इतनी ऊंची चढ़ाई चढ़ कर पहाड़ो पर जा रहें हैं और वहां पहुंच कर हाथ जोड़कर भगवान के जड़ चित्रों के आगे प्रार्थना कर रहे हैं कि हे प्रभु हम पर कृपा और आशीर्वाद करो। हमें सुख शांति का दान दो। *भक्तिमार्ग के इन सभी कर्म कांडो को मैं देखती जा रही हूं और मन ही मन विचार करती हूं कि बेचारे कितने घोर अंधियारे में पड़े है ये लोग*। इस बात से यह कितने अंजान हैं कि खुद को तकलीफ देकर, इतनी लंबी-लंबी जिस्मानी यात्राएं करके यह परमात्मा की कृपा व आशीर्वाद कभी नहीं पा सकते। क्योकि *परमात्मा कभी किसी पर कृपा व आशीर्वाद नही करते वह तो रास्ता बताते है स्वयं पर स्वयं ही कृपा व आशीर्वाद करने का*।

➳ _ ➳ परम शिक्षक बन कर परमात्मा स्वयं आ कर जो पढ़ाई पढ़ाते हैं उस पढ़ाई को अच्छी रीति पढ़ने वाले स्वयं ही स्वयं पर आशीर्वाद व कृपा कर लेते हैं। *यह विचार मन मे आते ही अब मैं फ़रिशता अपने गॉडली स्टूडेंट स्वरूप में स्थित हो जाता हूँ और गॉडली स्टूडेंट बन अब मैं चल पड़ती हूँ उस ईश्वरीय विश्वविद्यालय की ओर जहां पर मेरे परम शिक्षक, मेरे मीठे शिव बाबा परमधाम से हर रोज मुझे पढ़ाने आते हैं*। स्वयं भगवान आ कर मुझे वो अविनाशी पढ़ाई पढ़ाते हैं जिस पढ़ाई को पढ़ कर मैं भविष्य विश्व महारानी बनूँगी, यह विचार मन मे आते ही एक दिव्य आलौकिक नशे से मैं भरपूर हो

जाती हूँ और अपने परम शिक्षक को याद करते करते मैं पहुंच जाती हूँ अपने ईश्वरीय विश्वविद्यालय में और क्लासरूम में जा कर बाबा की याद में बैठ जाती हूँ।

➳ _ ➳ देखते ही देखते मेरे परम शिक्षक, मेरे मीठे प्यारे शिव बाबा अपने निर्धारित रथ ब्रह्मा बाबा के आकारी तन में विराजमान हो कर वहां उपस्थित होते हैं। *सामने संदली पर बैठे अपने परम शिक्षक बापदादा की उपस्थिति को अब मैं स्पष्ट अनुभव कर रही हूं*। उनके शक्तिशाली वायब्रेशन से पूरे क्लास रूम में जैसे एक रूहानी खुशबू छा गई है। एक दिव्य आलौकिक वायुमण्डल बन गया है। ब्राह्मण स्वरूप में स्थित सभी गॉडली स्टूडेंट्स अपने लाइट माइट स्वरूप में स्थित हो कर फ़रिश्ते बन गए है। *ऐसा लग रहा है जैसे मैं किसी फ़रिश्तों की सभा मे बैठी हूं*।

➳ _ ➳ मीठे बच्चे कहकर सभी ब्राह्मण बच्चो को सम्बोधित करते हुए बापदादा मधुर महावाक्य उच्चारण करते हैं और साथ साथ सभी को अपनी मीठी दृष्टि से निहाल करने लगते हैं। *आत्मिक स्मृति में स्थित हो कर, बाबा की शक्तिशाली दृष्टि से स्वयं को भरपूर करते करते मैं बाबा के मधुर महावाक्यों को बड़े प्रेम से सुन रही हूं*। स्वयं भगवान से पढ़ने का सर्वश्रेष्ठ सौभाग्य मुझे अंदर ही अंदर रोमांचित कर रहा है। और मैं मन ही मन अपने सर्वश्रेष्ठ भाग्य के बारे में सोच कर आनन्दित हो रही हूं कि कितनी सौभाग्यशाली हूँ मैं आत्मा जिसे भगवान से पढ़ने का सुनहरी मौका मिला। *अपने सर्वश्रेष्ठ भाग्य पर इठलाती हुई अब मैं आत्मिक स्मृति में स्थित हो कर पूरी तन्मयता से अपनी ईश्वरीय पढ़ाई में लग जाती हूँ*।

∬ 8 ∬ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं मन-बुद्धि की एकाग्रता दवारा हर कार्य मे सफलता प्राप्त करने वाली

आत्मा हूँ।*
✺ *मैं कर्मयोगी आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

——————————————————

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदैव बाप के स्नेह का रिटर्न देती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सदैव अन्दर से अनासक्त व मनमनाभव रहती हूँ ।*
✺ *मैं सहजयोगी आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

——————————————————

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ कर्म बन्धन से मुक्त स्थिति का अनुभव करने के लिए कर्मयोगी बनो:- सदा हर कर्म करते, कर्म के बन्धनों से न्यारे और बाप के प्यारे - ऐसी न्यारी और प्यारी आत्मायें अपने को अनुभव करते हो? कर्मयोगी बन, कर्म करने वाले कभी भी कर्म के बन्धन में नहीं आते हैं, वे सदा बन्धनमुक्त-योगयुक्त होते। *कर्मयोगी कभी अच्छे वा बुरे कर्म करने वाले व्यक्ति के प्रभाव में नहीं आते। ऐसा नहीं कि कोई अच्छा कर्म करने वाला कनेक्शन में आये तो उसकी खुशी में आ जाओ और कोई अच्छा कर्म न करने वाला सम्बन्ध में आये तो

गुस्से में आ जाओ - या उसके प्रति ईर्ष्या वा घृणा पैदा हो। यह भी कर्मबन्धन है। कर्मयोगी के आगे कोई कैसा भी आ जाए - स्वयं सदा न्यारा और प्यारा रहेगा।* नॉलेज द्वारा जानेगा, इसका यह पार्ट चल रहा है। घृणा वाले से स्वयं भी घृणा कर ले यह हुआ कर्म का बन्धन। ऐसा कर्म के बन्धन में आने वाला एकरस नहीं रह सकता। कभी किसी रस में होगा कभी किसी रस में। इसलिए अच्छे को अच्छा समझकर साक्षी होकर देखो और बुरे को रहमदिल बन रहम की निगाह से परिवर्तन करने की शुभ भावना से साक्षी हो देखो। इसको कहा जाता है - 'कर्मबन्धन से न्यारे'।

➹ _ ➹ क्योंकि ज्ञान का अर्थ है समझ। तो समझ किस बात की? कर्म के बन्धनों से मुक्त होने की समझ को ही ज्ञान कहा जाता है। ज्ञानी कभी भी बन्धनों के वश नहीं होंगे। सदा न्यारे। ऐसे नहीं कभी न्यारे बन जाओ तो कभी थोड़ा सा सेक आ जाए। *सदा विककर्माजीत बनने का लक्ष्य रखो। कर्मबन्धन जीत बनना है। यह बहुतकाल का अभ्यास बहुतकाल की प्रालब्ध के निमित्त बनायेगा।* और अभी भी बहुत विचित्र अनुभव करेंगे। तो सदा के न्यारे और सदा के प्यारे बनो। यही बाप समान कर्मबन्धन से मुक्त स्थिति है।

✺ *"ड्रिल :- कर्म बंधनों से मुक्त रहना।"*

➹ _ ➹ इस हलचल भरी सृष्टि पर मैं आत्मा कुछ आत्माओं के बीच बैठकर अपनी बुद्धि से शांतिधाम में स्थित हूं और शांतिधाम की गहन शांति को अपने अंदर अनुभव कर रही हूं.... जैसे-जैसे मैं इस शांति को अपने अंदर फील करती हूं वैसे वैसे मैं अपने आप को बहुत ही हल्का अनुभव करती हूँ... और *शांति धाम में उस लाल सुनहरे प्रकाश में मैं अपने साथ अनेक आत्माओं को भी देखती हूं जो शांति स्वरूप स्थिति में बैठकर अपना प्रकाश उस स्थान पर फैला रही है... और कुछ देर बाद में देखती हूं कि उस स्थान पर मेरे परम पिता परमात्मा ज्योति स्वरूप में विराजमान है और उनसे अनेक रंग बिरंगी किरणे निकल रही है जिसे देख कर मेरा मन अति आनंदित हो रहा है... परमात्मा की शीतल किरणें जैसे जैसे मुझ पर गिरने लगती है मैं बहुत ही आनंदित अवस्था को महसूस करती हूं...*

⋙ _ ⋙ इसी शांति स्वरूप स्थिति में मैं धीरे-धीरे अपनी कर्मभूमि पर आती हूं और *अपने आप पर शांतिधाम से आती हुई किरणों को अनुभव करती हूं... जिसके कारण मैं उस हलचल भरी दुनिया से अपने आप को दूर रख पाती हूं और यहां के तेज भागते हुए संकल्पों से अपने आप को डिटेच अनुभव करती हूँ...* जैसे जैसे मैं अपने इस स्थिति में स्थित होती हूँ वैसे ही वहां बैठी अन्य आत्माओं को मेरी स्थिति का अनुभव होता है और सभी आत्माएं व्याकुल होते हुए अपनी इस व्याकुलता भरे प्रश्न से मुझे अवगत कराते हुए इसका उत्तर जानने का प्रयास करते हैं... और मुझसे कहती हैं... यहां पर इस हलचल भरी दुनिया में रहते हुए भी तुम इस आनंदित भरी स्थिति का कैसे अनुभव कर पाती हो... क्या तुम्हें यहां की हलचल अपने वश में नहीं करती... तुम्हें यहां की गतिविधियां हलचल में नहीं लाती... जैसे ही यह आत्माएं मुझसे यह पूछती है तो मैं परमात्मा का धन्यवाद करती हूं और उनकी व्याकुलता को समझते हुए उनके सभी प्रश्नों का उत्तर देने के लिए उन्हें कहती हूं... हे आत्माओं अगर हमें इस हलचल भरी दुनिया से अपने आप को शांति भरी दुनिया में अनुभव करना है तो तुम्हें एक दृश्य को समझना होगा... इस दृश्य को देखकर तुम सहज ही अनुभव कर पाओगी कि मैं इस स्थिति का कैसे अनुभव कर पा रही हूं...

⋙ _ ⋙ कुछ समय बाद मैं उन आत्माओं को ज्योति स्वरुप में ही अपने साथ एक ऐसे स्थान पर ले जाती हूं जहां पर उन्हें अपने सभी प्रश्नों का उत्तर बड़ी ही सरलता से मिल सके... और हम अपना प्रकाश फैलाते हुए एक ऐसे स्थान पर आकर विराजमान हो जाते हैं जहां से हमें कमल कीचड़ में खिलता हुआ साफ साफ नजर आ रहा है... मैं उन आत्माओं से कहती हूं... हे आत्माओं अब आप इस दृश्य को बहुत ही गहराई से देखिए और समझिए... वह आत्माएं एकाग्रचित होकर उस दृश्य को देखती है और मेरे द्वारा कही हुई बातों को ध्यान से सुनने लगती है... मैं उन्हें कहती हूं कि इस कमल को देखिए यह सिर्फ कीचड़ में खिलता है परंतु कीचड़ में रहते हुए भी अपने आप को कीचड़ को छूने भी नहीं देता कीचड़ इसे छू भी नहीं पाती है... अगर यह कीचड़ में खिलकर कीचड़ में ही लिपट जाए तो इसे कोई भी मनुष्य देखेगा भी नहीं... क्योंकि कीचड़ के कारण इसकी सुंदरता और पवित्रता नष्ट हो जाएगी इसलिए *यह कमल अपनी ऊंची स्थिति के लिए अपने आप को कीचड़ में रखते हुए भी इससे दूर अनुभव करता है... इसके इसी गुण के कारण सभी मनुष्य इसकी

सुंदरता और पवित्रता को गहराई से अनुभव करते हैं...*

➳ _ ➳ मेरी इतनी बात सुनकर वह सभी आत्माएं संतुष्ट हो जाती है... और उसी समय यह कहती है कि इस कमल की तरह आज से हम भी इस मायावी दुनिया के कर्म बंधनों से अपने आप को दूर रखेंगे... और कहती हैं कि *हम जब भी कोई भी कर्म करेंगे और हमारे सामने कैसे भी संकल्पों वाली आत्माएं आये तो हमें उनके संकल्पों से कोई असर नहीं पड़ेगा और ना ही हम अपनी स्थिति को हलचल में आने देंगे... ऐसा करने पर ही हम हमारी ऊंची इस स्थिति को सहज ही अनुभव कर पाएंगे और प्रभु के प्यारे बन पाएंगे...* इतना कहकर वह सभी आत्माएं वहां से मेरे साथ प्रस्थान करने लगती है... और उसी समय से अपने आप को शांतिधाम में अनुभव करती हैं... रास्ते में चलते समय कई बार ऐसी परिस्थिति आई जिसके कारण हमारी स्थिति में हलचल आ सकती थी... परंतु हमने अपने आपको परमात्म प्यार में अनुभव किया और कर्मयोगी स्थिति का अनुसरण किया... जिससे हमारी स्थिति बनी रहे और हम चलते चलते वापिस अपने इस देह में विराजमान हो जाते हैं...

➳ _ ➳ *और हमारा यह छोटा सा समूह इस दुनिया में रहते हुए भी बहुत ही गहन शांति का अनुभव करती है... जिसे देखकर अन्य आत्माएं बहुत ही आकर्षित और खुश होती हैं और हम सभी अब अन्य आत्माओं के किसी भी कर्म को अपने ऊपर हावी नहीं होने देते और ना ही उनके कोई भी संकल्प हमारी स्थिति को हलचल में ला सकते हैं...* अब हम केवल इस स्थिति का अनुभव करते हैं जैसे कि एक व्यक्ति फांसी पर लटका हुआ हो अर्थात हमारा यह देह इस संसार में दिखाई देगा कर्मयोगी के रूप में और हम मन बुद्धि से शांतिधाम में अपने परमपिता परमात्मा के साथ अपने आप को अनुभव करते हैं... इन्हीं विचारों के साथ और इन्हीं संकल्पों के साथ हम वापस अपने इस देह में रहते हुए अपने आप को शांतिधाम में परमात्मा के साथ अनुभव करते हैं...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔